7:14

Dairy-Farming....
basu.org.in

प्रसार पुस्तिका संख्या:- DEE/2021/01

डेयरी फार्मिंग: एक लाभदायक व्यवसाय

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
BIHAR ANIMAL SCIENCES UNIVERSITY

प्रसार शिक्षा निदेशालय
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना-14

7:14
Dairy-Farming....
basu.org.in

डेयरी फार्मिंगः एक लाभदायक व्यवसाय

भारत एक कृषि प्रधान देश है, यहाँ कि 70 प्रतिशत आबादी अभी भी कृषि एवं उससे संबंधित उधोगों पर निर्भर है। साथ ही पशुपालन खासकर गौ एवं भैंस पालन हमारे जीवन का अटुट हिस्सा रहा है। यह प्राचीन काल से ही ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की प्रोटीन की जरूरतों को पुरा करते आ रहा है। वर्तमान समय में भारत दुग्ध उत्पादन में पूरे विश्व में प्रथम स्थान पर है। यह उत्पादन 2015–16 में 155.5 मिलियन टन था और हम दुनिया की 18.5% दुग्ध उत्पादन 6.26% वृद्धि दर से कर रहे हैं जबकि दुनिया में यह वृद्धि दर मात्र 3.1% है। पशुगणना 2007 के अनुसार बिहार राज्य गायों की संख्या में पाँचवाँ एवं भैसों की संख्या में छठा स्थान रखता है तथा ग्रामीण क्षेत्रों में लगभग 80 प्रतिशत लोग गौ एवं भैंस पालन से जुडे हैं। उनमें महिलाओं की भागीदारी भी काफी अच्छी संख्या में है। फिर भी हमारा राज्य दुग्ध उत्पादन में नवें स्थान पर है और प्रति व्यक्ति दूध की उपलब्धता 184 ग्राम है, जो कि न्यूनतम मानदंड (280 ग्राम/व्यक्ति) से काफी कम है। इसका प्रमुख कारण सही प्रबंधन सिद्धांतों की जानकारी न होना है।

पशुपालकों को मानक प्रबन्धन व्यवस्था की उचित जानकारी न होने के कारण अपेक्षित लाभ नहीं प्राप्त हो रहा है। मानक प्रबन्धन की जानकारी के लिए हम इन्हें विभिन्न आयामों में बाँटकर देखेंगें एवं कुछ महत्वपुर्ण बातों का उल्लेख करेंगें।

1. नवजात बछड़ों का प्रबंधन

•नवजात के जन्म के तुरंत बाद, नाल में नवजात के शरीर से एक इंच छोड़कर गाँठ बांध दे एवं उसके उपरांत नये ब्लेड से काट दें एवं एंटीसेप्टिक लगा दें। यह पशु बच्चों को नेवल इल (Navel ill) नाम की बीमारी से बचाएगा।

•जन्म के आधे घंटे के अन्दर से ही खीस पिलाना शुरू कर देना चाहिए। यह 3–4 दिन तक वजन के हिसाब से सामान्यतः दसवें भाग के बराबर, खुराक को दो तीन बार में खिलाना चाहिए। खीस में मौजुद तत्व कई प्रकार की बीमारियों से बचाता है।

•बछड़ों में कृमिनाषक का प्रयोग 7–10 दिन से ही शुरू कर दें इसके बाद एक नियमित अन्तराल पर कृमिमुक्त अवश्य करें।

2.आहार प्रबंधन

•पशुओं को उसके वजन के हिसाव से खाना दिया जाना चाहिए। यह शुष्क मात्रा के हिसाब से वजन का 2–3% होना चाहिए। अर्थात अगर 400 किलो ग्राम की गाय है तो 8–12 किलो शुष्क मात्रता खाने से आनी चाहिए। अच्छे एवं संतुलित आहार में दो तिहाई मात्रा सुखा तथा हरा चारा एवं एक तिहाई भाग दाना मिश्रण होनी चाहिए।

•अगर गाय/भैंस 10 लीटर से ज्यादा दुध दे रही हो तो गाय को प्रति तीन किलो दुध पर एक किलो दाना तथा भैंस को प्रति ढाई किलो पर एक किलो दाना मिश्रण ज्यादा देना चाहिए।

•गर्भवती गाय/भैंस को गर्भावस्था के अंतिम दो महिने करीब 1.5 से 2 किलों दाना अतिरिक्त आहार के रूप में देना चाहिए क्योंकि उस समय भ्रुण का विकास तेजी से होता है।

•पशु के पूरे आहार को ज्ञात कर उसे विभाजित कर दो या तीन बार में प्रतिदिन देना चाहिए, इससे उसका पाचन बेहतर होगा।

7:15
Dairy-Farming....
basu.org.in

•प्रतिदिन खाने में नमक एवं मिनरल मिक्चर की उपलब्धता सुनिश्चित करना चाहिएं यह पशुओं में पुनरूत्पादन की समस्याओं से बचाएगा।

•स्वच्छ एवं शीतल पानी दिन में कम से कम तीन बार पिलाना चाहिए

•खाने में हरा चारा का प्रयोग दुध में वसा की मात्रा बढाता है। इसका प्रयोग अवश्य करें।

• ह (Hay) एवं साइलेज (Silage) या युरिया संबर्धित पुआल का उपयोग चारे की कमी के समय कर सकते है।

3. आवास प्रबन्धन

•यह किसान के आवास से अलग जगह पर जहाँ उँचा स्थान, प्रकाश एवं हवादार हो, वहाँ बनाना चाहिए।

•शेड की लम्बवत दिशा पूर्व–पश्चिम होनी चाहिए। फर्श अगर ईंट को तोड़कर बनाया गया हो तो वो कच्चा फर्श या सीमेंट फर्श से बेहतर होगा।

•शेड की नियमित सफाई एवं डिसन्फेक्टेंट का प्रयोग समय–समय पर करना चाहिए इससे जीवाणु लोड घटा रहेगा।

•खाने का स्थान या मैन्जर पक्के का होना चाहिए एवं उसमें नियमित सफाई जरूरी है उसी तरह पानी पीने की जगह या मैन्जर साफ एवं समय–समय पर चुने पुताई करनी चाहिए।

•पशुओं को कम से कम 14–15 घंटे प्रकाश की व्यवस्था करें उससे 5% तक दुध उत्पादन बढ़ जाता है।

4.पशु अनुवांशकी एवं प्रजनन प्रबंधन

•सही नस्ल का चुनाव डेयरी फार्मिंग के लिए सबसे महत्वपूर्ण है इसलिए हम उतम ब्रीड का चयन करेंगें।

गाय– साहीवाल, गिर, थारपारकर

भैंस– मुर्रा, नीली–रावी

संकर किस्म की गाय – फ्रीजियन संकर एवं जर्सी संकर

•हमेशा A.I करें, अपने जानवर की नस्ल देखकर। अगर A.I संभवन न हो तो पेडिग्री (Pedigree) साँड का ही उपयोग करें प्रजनन के लिएं।

•सही समय पर पशु के गर्म (Estrous) होने की पहचान कर A.I के लिए ले जायें।

•प्रजनन रिकार्ड अवश्य रखें एवं 45–60 दिनों के उपरांत गर्भावस्था की जाँच के लिए पशु को अवश्य ले जायें।

•पशु के बच्चे देने के 60–90 दिनों के अंदर ही दुबारा पशु का प्रजनन या A.I करवा दें उससे आपके फार्म पर हर 13–14 महीनें में नयें बच्चों का जन्म होगा और निरंतर दुध मिलता रहेगां साथ ही यह मन से निकाल दें कि जल्द A.I करवाने से दुध में कमी हो जाएगी।

5. पशु स्वास्थय प्रबंधन

•बीमार पशु को समूह से अलग रखें।

•शेड की सफाई पर ध्यान दें, समय–समय पर डिसइन्फटेंट (Disinfectant) का प्रयोग करें।

•नियमित टीकाकरण चार्ट फार्म पर चिपका दें एवं उसका अनुपालन करें।

•नियमित समय पर पशु को कृमिमुक्त करना भी जरूरी है उसके लिए चार्ट बनाकर फार्म पर चिपका दें नियमित

पशु के बच्चे देने के 60–90 दिनों के अंदर ही दुबारा पशु का प्रजनन या A.I करवा दें उससे आपके फार्म पर हर 3–14 महीनें में नयें बच्चों का जन्म होगा और निरंतर दुध मिलता रहेगां साथ ही यह मन से निकाल दें कि जल्द A.I करवाने से दुध में कमी हो जाएगी।

पशु स्वास्थय प्रबंधन

बीमार पशु को समूह से अलग रखें।

शेड की सफाई पर ध्यान दें, समय–समय पर डिसइन्फटेंट (Disinfectant) का प्रयोग करें।

नियमित टीकाकरण चार्ट फार्म पर चिपका दें एवं उसका अनुपालन करें।

नियमित समय पर पशु को कृमिमुक्त करना भी जरूरी है उसके लिए चार्ट बनाकर फार्म पर चिपका दें नियमित कृमिमुक्त करने से पशुओं के शारीरिक वृद्धि एवं उत्पादन में वृद्धि होती है।

•मरे हुए जानवर का निस्तारन अच्छी तरह करें क्योंकि यह इन्फेक्शन फैला सकता है। इसीलिए या तो उसे जला दें या अच्छी तरह गहरा गढ़ा खोदकर डाल दें एवं उसे ढंक दें।

(च) दुध दुहाई प्रबंधन

•दुध दुहने की जगह साफ, षुश्क, एवं धुलरहित होना चाहिए।

•दुध का बर्तन एवं दुहने वाले दोनों स्वच्छ एवं स्वस्थ होने चाहिए।

•हमेशा पुरे हाथ से दुध निकालें, न कि अंगुठा दबाकर जिससे टीट छिलने का खतरा रहता है।

•दुहाई 5–7 मिनट में पुरी हो जानी चाहिए, नहीं तो उत्पादन घट जाएगा। साथ ही इतना दाना नाद में रहना चाहिए कि जानवर पाँच घंटा तक खरा रहे, जिससे किम टिट का पोर उतना देर में बन्द हो जाय एवं गाय के जमीन पर बैठने में इन्फेक्शन नही हो, जिससे कि मास्टाइटिट (Mastitis) का खतरा कम हो जाता है।

•दुध निकालने के पहले पशु को मारना, पीटना, डराना इत्यादि नहीं चाहिए नहीं तो दुध घट जाएगा।

•अगर गाय/भैंस पहली बार बच्चा दे रही हो तो थन का मसाज 5 मिनट सुबह–शाम करें उससे थन का विकास भी होगा एवं दुध दुहने समय पैर भी नहीं फेकेगी।

•अगर गाय/भैंस 10 लीटर से ज्यादा दुध दे रही हो तो उससे तीन बार दुध निकालना चाहिए इससे दुध उत्पादन 10% तक बढ़ जाता है।

•बच्चा देने के 2 महीने पहले दुध निकालना बन्द कर दें एवं ठीक से दवाई से सील कर दें उससे थनैला का खतरा नहीं रहता है।

•दुध का रिकार्ड अवश्य रखें। यह आपको फार्म पर होने वाली गतिविधियों का निचोड़ है। यह पशु की स्थिति से लेकर नुकसान से भी अवगत कराएगा।

अगर हम उपरोक्त बातों पर ध्यान रखकर डेयरी फार्मिंग करें तो इससे हम बढ़ती बेराजगारी को घटाकर एवं कृषि की अनिश्यितता के दुश्प्रभाव को कम कर, अपने प्रदेश में दुध की नदी बहा सकते है।